सवैये

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» भक्तिकाल का प्रसंग और रसखान का जीवन-परिचय

प्रश्न 1 (आसान). रसखान का जन्म किस वर्ष माना जाता है?
उत्तर – सन् 1548 में

प्रश्न 2 (आसान). रसखान का मूल नाम क्या था?
उत्तर – सैयद इब्राहिम

प्रश्न 3 (मध्यम). कृष्णभक्ति ने रसखान को कौन-सी दीक्षा लेने के लिए प्रेरित किया और उससे क्या संकेत मिलता है?
उत्तर – गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेने के लिए; इससे संकेत मिलता है कि कृष्णभक्ति ने उन्हें भीतर से गहराई तक बदल दिया और उनके जीवन-प्रवेश को नई दिशा मिली।

प्रश्न 4 (कठिन). रसखान के 'दिल्ली के आस-पास रहने' से 'ब्रजभूमि में बसने' तक का बदलाव अपने शब्दों में 4-5 पंक्तियों में लिखो।
उत्तर – रसखान पहले दिल्ली के आस-पास रहते थे और उनका जीवन पुराने संदर्भों से जुड़ा था। कृष्णभक्ति उन्हें इतना मुग्ध कर गई कि वे गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेने लगे। दीक्षा के बाद उनका मन पूरी तरह कृष्ण-भक्ति की धारा में लग गया। इसी वजह से वे ब्रजभूमि में जाकर बस गए, जहाँ कृष्ण-उपासना का माहौल स्वाभाविक रूप से उनके भावों से मेल खाता था।

» रसखान की प्रमुख कृतियाँ और काव्य-विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). रसखान की किन दो उपलब्ध कृतियों का उल्लेख प्रमुख रूप से मिलता है?
उत्तर – सुजान रसखान और प्रेमवाटिका।

प्रश्न 6 (आसान). रसखान की काव्य-प्रवृत्तियों में कौन-कौन सी तीन बातें खास हैं?
उत्तर – कृष्ण-रूप, ब्रज-महिमा और राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाएँ।

प्रश्न 7 (मध्यम). "ब्रजभाषा का अत्यंत सरस और मनोरम प्रयोग मिलता है, जिसमें शब्दाडंबर नहीं है"–इसका भावार्थ क्या है?
उत्तर – भाषा मीठी/प्रभावशाली है, लेकिन दिखावे वाला बनावटीपन (शब्दाडंबर) नहीं है।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर तुम्हें किसी सवैये में कृष्ण के रूप की जगह ब्रजभूमि के प्राकृतिक-स्थानों के वर्णन ज्यादा मिलें, तो तुम किस प्रवृत्ति की पहचान कर रहे हो?
उत्तर – ब्रज-महिमा की प्रवृत्ति की।

» सवैया छंद की पहचान (22 से 26 वर्ण)

प्रश्न 9 (आसान). सवैया छंद की पहचान के लिए कुल कितने वर्णों की रेंज दी जाती है?
उत्तर – 22 से 26 वर्ण

प्रश्न 10 (आसान). यदि किसी सवैये जैसी पंक्ति में कुल 22 वर्ण हों, तो पहचान सही होगी या नहीं?
उत्तर – सही, क्योंकि 22 रेंज में है

प्रश्न 11 (मध्यम). किसी पंक्ति में 26 वर्ण गिने गए। क्या वह सवैया छंद हो सकता है?
उत्तर – हाँ, 26 भी 22-26 की रेंज में है

प्रश्न 12 (कठिन). अगर किसी पंक्ति में 21 वर्ण हों, तो सवैया छंद की पहचान के हिसाब से क्या निष्कर्ष निकालोगे?
उत्तर – यह 22-26 की रेंज से कम है, इसलिए सवैया की पहचान नहीं बनती

» 'मानुष हौं...' : ब्रज-प्रेम का अर्पण-भाव (मैं क्या बनूँ?)

प्रश्न 13 (आसान). 'मानुष हौं तो...' में कवि क्या चाहता है?
उत्तर – इंसान होकर भी ब्रज में बसना/स्थायी निवास रखना।

प्रश्न 14 (आसान). 'जौ पसु हौं...' में कवि किस काम की कल्पना करता है?
उत्तर – नंद की धेनु (गायों) के बीच रोज़ चरना।

प्रश्न 15 (मध्यम). पाहन और खग वाली कल्पनाएँ किस बात को और मजबूत करती हैं—प्रेम की भावना या लक्ष्य?
उत्तर – लक्ष्य को—क्योंकि रूप बदलता है पर ब्रज का सान्निध्य स्थायी रहता है; प्रेम उसी लक्ष्य तक अर्पित है।

प्रश्न 16 (कठिन). यदि कवि को केवल 'ब्रज' से लगाव दिखाना होता तो वह सिर्फ एक ही रूप कहता। फिर वह इंसान, पशु, पाषाण/गिरि, खग—चार रूप क्यों जोड़ता है?
उत्तर – क्योंकि वह दिखाना चाहता है कि उसका अर्पण-भाव हर हाल में वही रहेगा; रूप बदलने पर भी ब्रज से दूरी नहीं—इसीलिए चारों रूप जोड़कर लक्ष्य को स्थायी साबित करता है।

» ब्रज के दृश्य-निहार और मनोवृत्ति (बन-बाग-तड़ाग, यमुना-कदंब)

प्रश्न 17 (आसान). 'निहारांै' शब्द में कवि का मतलब सिर्फ देखना है या मन भी जुड़ता है?
उत्तर – सिर्फ देखना नहीं—मन भी जुड़ता है; ध्यान से देखकर मन ब्रज में रम जाता है।

प्रश्न 18 (आसान). बन-बाग-तड़ाग का संबंध कवि के किस भाव से जोड़कर उत्तर दिया जाता है?
उत्तर – कविता के भक्तिभाव और ब्रज-सान्निध्य की तीव्र इच्छा से।

प्रश्न 19 (मध्यम). यमुना-कदंब की छाँव कवि के लिए क्यों खास मानी जाती है? (कारण लिखिए)
उत्तर – क्योंकि यह ब्रज की पहचान है और कृष्ण-लीला-भक्ति का अनुभव कराती है; इसी से कवि का भाव मजबूत होता है।

प्रश्न 20 (कठिन). पिछले भाव (रूप बदलना पर ब्रज-सान्निध्य न बदलना) को ध्यान में रखकर बताइए कि इन दृश्यों के पीछे कवि का 'तर्क' क्या है?
उत्तर – कवि कहता है कि भले ही रूप बदल जाए, लेकिन लक्ष्य ब्रज में रहकर कृष्ण की भक्ति है। इसलिए बन-बाग-तड़ाग और यमुना-कदंब के दृश्य केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि उसी लक्ष्य तक पहुँचाने वाले भक्तिभाव के आधार हैं।

» गोपियों की मुरली-धुन पर आसक्ति और वशीकरण-सी विवशता

प्रश्न 21 (आसान). 'न जैहै, न जैहै, न जैहै' से कवि क्या दिखाता है?
उत्तर – कृष्ण की मुसकान/मोह का असर रोकना संभव नहीं—विवशता

प्रश्न 22 (आसान). गोपियों/रसखानि की आसक्ति किस पर केंद्रित है?
उत्तर – कृष्ण की मुरली-धुन और उसकी मोहनी तान पर

प्रश्न 23 (मध्यम). ब्रज के लोग 'समझाने' की कोशिश करें तो भी असर क्यों नहीं जाता?
उत्तर – क्योंकि यह असर तर्क से नहीं, अनुभव से है—प्रेम-मोह वशीकरण जैसा हो जाता है

प्रश्न 24 (कठिन). कविता के भाव के आधार पर लिखिए: 'वशीकरण-सी विवशता' और सिर्फ 'प्यार' में फर्क क्या है?
उत्तर – सिर्फ प्यार में इच्छा कुछ हद तक अपने पास रहती है, पर वशीकरण-सी विवशता में प्रेम इतना प्रबल होता है कि रोकना/नियंत्रण करना मुश्किल हो जाता है—मन खींचा हुआ-सा लगता है

» भाषिक सौंदर्य और शब्दार्थ-आधारित समझ (शब्द-संपदा)

प्रश्न 25 (आसान). 'मानुष हौं तो वही रसखानि बसांै ब्रज गोवुफल गाँव वेफ ग्वारन'–यहाँ 'ग्वारन' से कवि का भाव कैसा दिखता है?

उत्तर – बसने/ब्रज में रहने जैसा गहरा लगाव दिखता है।

प्रश्न 26 (आसान). 'मोरपखा सिर उफपर राखिहौं' में 'मोरपखा' शब्द का काम क्या है?

उत्तर – रूप-धारण का दृश्य बनाकर भाव को सजीव बनाना।

प्रश्न 27 (मध्यम). पंक्ति 'भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।' 'स्वाँग' का सही अर्थ लेकर भाव समझाइए।

उत्तर – स्वाँग = रूप-धारण/स्वरूप में ढलना; कवि की तन्मयता और समर्पण–कृष्ण-इच्छा अनुसार पूरा 'रूप' अपनाने की चाह।

प्रश्न 28 (कठिन). 'जौ खग हौं तो बसेरो करांै मिलि कालिंदी वूफल कदंब की डारन।' 'कालिंदी' और 'कदंब' शब्दार्थ से भाव किस तरह मजबूत होता है? समझाइए।

उत्तर – कालिंदी = नदी, कदंब = पेड़; इनसे ब्रज-स्थल का चित्र बनता है। 'बसेरो' (बसना) के साथ मिलकर भाव बनता है कि कवि हर रूप में कृष्ण-भूमि के उस प्राकृतिक-सांस्कृतिक परिवेश में स्थायी रूप से रहना चाहते हैं।

» भाव स्पष्ट करना, काव्य-सौंदर्य बताना और कक्षा-आधारित अभ्यास

प्रश्न 29 (आसान). भाव स्पष्ट करने में उत्तर का पहला भाग क्या होना चाहिए?

उत्तर – पंक्ति/शब्द का संकेत (क्या-क्या लिखा है) ।

प्रश्न 30 (आसान). काव्य-सौंदर्य बताने के लिए किन 3 बातों पर ध्यान देते हैं?

उत्तर – शब्द-चयन, चित्रण/दृश्य-रचना, और भाव-तीव्रता।

प्रश्न 31 (मध्यम). अगर सवैये में 'कदंब' और ब्रज-प्रकृति के शब्द आएँ, तो भाव और सौंदर्य कैसे लिखेंगे?

उत्तर – भाव: ब्रज-प्रेम/तन्मयता कि कवि को ब्रज का हर दृश्य प्रिय है। सौंदर्य: 'कदंब' जैसे शब्दों से प्रकृति का चित्र बनता है और प्रेम की अनुभूति उभरती है।

प्रश्न 32 (कठिन). कक्षा में 'आदर्श वाचन' और 'कंठस्थ' का भाव-लेखन पर क्या असर पड़ता है? प्रश्न-अभ्यास में इसका फायदा कैसे लिखेंगे?

उत्तर – आदर्श वाचन से ठहराव और सही भाव समझ आता है, इसलिए भाव स्पष्ट लिखना आसान होता है। कंठस्थ से शब्द और लय याद रहती है, इसलिए उत्तर पंक्ति से जुड़ा और स्वाभाविक बनता है–यानी संकेतभावसौंदर्य सही तरह दिख पाता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रसखान के जीवन-परिचय की 4 बातें अपने शब्दों में लिखो और हर बात के साथ यह जोड़ो कि वह कृष्णभक्ति-प्रेरित जीवन-प्रवेश को कैसे दिखाती है।

› रसखान का जन्म-साल (1548) लिखो और बताओ कि यह उनके जीवन का आरंभिक तथ्य है।

› उनका मूल नाम (सैयद इब्राहिम) और निवास (दिल्ली के आस-पास) लिखो–बताओ कि वे पहले अलग जगह/पहचान से जुड़े थे।

› गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लिखो–बताओ कि कृष्णभक्ति ने उन्हें औपचारिक रूप से गहराई में जोड़ा।

› ब्रजभूमि में बसना और मृत्यु का लगभग समय (1628) लिखो–बताओ कि भक्ति की दिशा ने उनके जीवन का अंतिम चरण भी बदल दिया।

उत्तर – रसखान का जन्म 1548 में माना जाता है। उनका मूल नाम सैयद इब्राहिम था और वे दिल्ली के आस-पास रहते थे–यानी वे पहले अपने पुराने जीवन-संदर्भ में थे। कृष्णभक्ति ने उन्हें इतना मुग्ध किया कि वे गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेते हैं–यह दिखाता है कि भक्ति ने उन्हें भीतर से बदल दिया। इसके बाद वे ब्रजभूमि में जा बसे, और लगभग 1628 में उनकी मृत्यु मानी जाती है–यानी उनकी पूरी जीवन-दिशा कृष्णभक्ति की धारा से जुड़ गई थी।

उदाहरण 2. प्रश्न: "ब्रज-महिमा" का मतलब रसखान के सवैयों में कैसे समझोगे? एक बात बताओ जो ब्रजभूमि के प्रति उनके अनन्य प्रेम को दिखाती हो।

› सबसे पहले ब्रज-महिमा को पहचानो: ब्रज के स्थानों/प्रकृति का वर्णन सिर्फ भूगोल नहीं, भाव बन जाता है।

› सवैये में जहाँ-जहाँ ब्रज के वन, बाग, तालाब, गिरि, कालिंदी, कदंब जैसे नाम आते हैं, वहाँ कवि की नजर प्रेम से रुकती है।

› यानी ब्रजभूमि को कवि "अपनी" मानकर देखता है–इससे प्रेम की गहराई समझ आती है।

उत्तर – रसखान के सवैयों में "ब्रज-महिमा" का मतलब है–ब्रजभूमि के वन, बाग, तालाब, गिरि आदि का वर्णन ऐसा करना कि वह सिर्फ प्राकृतिक जगह न रहकर कवि के प्रेम का केंद्र बन जाए।

उदाहरण 3. दिए गए सवैया जैसे 1 पंक्ति में वर्ण गिनो: मान लो पंक्ति के अंत में गिनती करने पर कुल 25 वर्ण आए। क्या यह सवैया छंद की पहचान में फिट बैठता है?

› पंक्ति को ध्यान से पढ़ो

› हर वर्ण (अक्षर) को एक-एक करके गिनो

› कुल वर्ण 25 निकलें

› जाँचो: क्या 25, 22 से 26 की रेंज में है?

उत्तर – हाँ, 25 वर्ण 22-26 की रेंज में है, इसलिए यह सवैया छंद की पहचान में फिट बैठता है।

उदाहरण 4. नीचे की कल्पना-पंक्तियों को भावार्थ के अनुसार पहचानो: कवि कहता है–'मानुष हौं तो वही...', 'जौ पसु हौं...', 'पाहन हौं...', 'जौ खग हौं...'। बताओ इनका सामान्य लक्ष्य क्या है और कवि अर्पण-भाव कैसे दिखाता है?

› 'मानुष हौं...' को समझो: इंसान बनकर भी कवि ब्रज में बसना चाहता है।

› 'जौ पसु हौं...' को समझो: पशु बनकर भी रोज़ नंद की गायों के बीच रहना चाहता है।

› 'पाहन हौं...' को समझो: पत्थर/गिरि बनकर भी ब्रज-प्रकृति/पवित्र धारण से जुड़ी भूमिका चाहता है।

› 'जौ खग हौं...' को समझो: पक्षी बनकर भी कालींदी और वृक्षों की डालों पर बसेरा चाहता है।

› अब निष्कर्ष लिखो: रूप बदलता है, पर ब्रज-निवास/सान्निध्य ही स्थायी लक्ष्य है; यही अर्पण-भाव है।

उत्तर – सामान्य लक्ष्य: हर स्थिति में ब्रज-निवास/सान्निध्य। कवि अर्पण-भाव 'मैं क्या बनूँ?' के जरिए दिखाता है–इंसान, पशु, पाषाण/गिरि, खग–हर रूप में वह स्वयं को ब्रज से जोड़ देता है।

उदाहरण 5. कवि के 'बन-बाग-तड़ाग निहारांै' और 'कालिंदी/कदंब' से जुड़े चित्रों के पीछे उसकी मनोवृत्ति (भक्तिभाव) समझाइए। उत्तर में कारण भी लिखिए।

› कवि के शब्द 'बन-बाग-तड़ाग निहारांै' को तोड़कर अर्थ लिखो: वन, बगीचे, तालाब का ध्यान से देखना

› बताओ कि 'निहारना' केवल आँखों का काम नहीं: मन भी ब्रज में रम जाता है

› फिर 'यमुना/कदंब' की छाँव को समझाओ: यह ब्रज की पहचान है और कृष्ण-लीला-भक्ति का अनुभव कराती है

› अंत में कारण जोड़ो: इसलिए कवि रूप बदलने की बात भी करता है, पर लक्ष्य ब्रज-सान्निध्य और कृष्ण-भक्ति रहती है

उत्तर – कवि 'बन-बाग-तड़ाग निहारांै' में ब्रज के वन, बगीचे और तालाब का सौंदर्य ध्यान से देखता है। यहाँ 'निहारना' सिर्फ दृश्य देखना नहीं है, बल्कि मन का ब्रज-प्रेम में डूब जाना है। फिर 'कालिंदी/कदंब' की छाँव इसलिए आती है क्योंकि ये ब्रज की प्रमुख पहचानें हैं–इनसे कृष्ण-लीला का भाव और भक्तिभाव मजबूत होता है। इसलिए इन दृश्यों के पीछे कवि की मनोवृत्ति यह है कि वह ब्रज में रहकर कृष्ण की भक्ति-सेवा के भाव को हर रूप में निभाना चाहता है; रूप बदल सकता है, पर ब्रज-सान्निध्य और लगाव नहीं बदलता।

उदाहरण 6. तीसरे-चौथे सवैये के भाव के आधार पर बताइए कि गोपियाँ/रसखानि कृष्ण-मुरली की धुन पर 'आसक्ति और वशीकरण-सी विवशता' क्यों अनुभव करते हैं? (किस भावना के कारण रूप-स्वीकार/समर्पण की चाह बनती है?)

› कविता में 'मोहनी तानन' को पहले कारण मानो–धुन का मन पर सीधा असर

› 'अटा चढ़ि' और बार-बार दोहराव ('न जैहै, न जैहै, न जैहै') से 'रुक न पाना' समझो

› 'मुख की मुसकानि' से असर और गहरा होता है–केवल सुनना नहीं, भाव में बह जाना

› इस अनुभव को नाम दो: प्रेम-मोह जो वश में कर दे

› निष्कर्ष लिखो: इसी प्रेम-मोह से समर्पण/रूप-स्वीकार की चाह बनती है

उत्तर – गोपियाँ/रसखानि कृष्ण की मोहनी मुरली-धुन और मुख-मुसकान के प्रेम-मोह से इतने मुग्ध हो जाते हैं कि अपनी इच्छा पर नियंत्रण नहीं रहता–वशीकरण-सी विवशता बन जाती है। इसी भावना से रूप-स्वीकार/समर्पण की चाह उभरती है।

उदाहरण 7. सवैये की पंक्ति है: 'जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।' इस पंक्ति में 'पसु', 'धेनु' और 'मँझारन' शब्दार्थ लेकर भाव स्पष्ट कीजिए।

› 'जौ' का मतलब समझो: अगर/मान लो कवि रूप बदलना चाहते हैं।

› 'पसु' का अर्थ–कवि मनुष्य नहीं, पशु का रूप चुनने की बात कर रहे हैं।

› 'धेनु' का अर्थ–गाय/गायों का झुंड (नंद की गोप-परंपरा वाली गायें)।

› 'मँझारन' का संकेत–बीच/झुंड के भीतर चरना; यानी कृष्ण के आसपास रहना, सिर्फ दूर से नहीं।

› अब भाव जोड़ो: कवि की आसक्ति इतनी कि वे पशु बनकर भी नंद की गायों के बीच रहना चाहते हैं–प्रेम-समर्पण पूरी तरह।

उत्तर – शब्दार्थ के आधार पर भाव यह है कि कवि कृष्ण-प्रेम में इतना डूबे हैं कि वे मनुष्य होने की जगह 'पसु' बनकर 'नंद की धेनु' के 'मँझारन' (झुंड के बीच/आसपास) में नित्य चरना चाहते हैं–यानी उनकी आसक्ति केवल कल्पना नहीं, साथ रहने वाली इच्छा है।

उदाहरण 8. प्रश्न-अभ्यास के लिए: 'अच्छा लगना' और ब्रज-स्थानों के उल्लेख वाले सवैये में भाव स्पष्ट कीजिए तथा काव्य-सौंदर्य बताइए।

› पहले पंक्ति/शब्द का संकेत पकड़ो–कवि ने ब्रज-स्थानों और 'अच्छा लगना' जैसे भाव-उद्बोधक शब्द रखे हैं।

› अब भाव लिखो: "कवि को ब्रज का वातावरण बहुत आत्मीय और आकर्षक लग रहा है; मन उसमें तन्मय हो रहा है।"

› फिर सौंदर्य बताओ: "कवि ने ब्रज के नाम लेकर एक दृश्य-सा रचा है और भाव को 'अच्छा लगना' जैसी सहज अनुभूति से तीव्र किया है।"

› उत्तर को क्रम में लिखो: संकेत भाव सौंदर्य

उत्तर – यहाँ कवि का भाव है कि ब्रजभूमि उसके लिए अत्यंत आत्मीय है और 'अच्छा लगना' वाली अनुभूति उसके मन को तन्मय कर देती है। काव्य-सौंदर्य इस बात में है कि कवि ने 'अच्छा लगना' जैसे सहज भाव और ब्रज-स्थानों के उल्लेख से मन के सामने दृश्य बना दिया है, जिससे प्रेम की तीव्रता सीधे पाठक तक पहुँचती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर लिखते समय 'कृष्णभक्ति ने जीवन की दिशा कैसे बदली' जरूर लिखो।
- कृतियाँ (सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, रचनावली) + तीन काव्य-प्रवृत्तियाँ जरूर लिखो।
- छंद पहचान में 'वर्ण' गिनना लिखकर दिखाओ–बीच में अनुमान न लगाओ।
- पंक्ति-दर-पंक्ति 'अगर...तो...' का सामान्य लक्ष्य लिखो: ब्रज-निवास/सान्निध्य।
- उत्तर लिखते समय 'दृश्य' के साथ 'कारण/मनोवृत्ति' जरूर लिखो।
- भाव-विश्लेषण लिखते समय 'वशीकरण-सी विवशता' शब्द जरूर जोड़ो–सिर्फ 'प्रेम' कम अंक देता है।
- भाव स्पष्ट करते समय 1-2 प्रमुख शब्दों का अर्थ लिखना जरूर करें।
- बोर्ड/अभ्यास में भाव और सौंदर्य अलग-अलग लिखो–'भाव' के लिए मनोदशा, 'सौंदर्य' के लिए तकनीक/चित्रण।

एक नज़र में रिवीज़न

› - 1548 जन्म, 1628 मृत्यु; दीक्षा विट्ठलनाथ, ब्रज-प्रवेश
› - कृष्ण-रूप, ब्रज-महिमा, राधा-कृष्ण प्रेम-लीला
› - सवैया: 22-26 वर्ण
› रूप बदलो, ब्रज न बदलो—यही अर्पण-भाव है।
› बन-बाग-तड़ाग: निहारना + मन; यमुना-कदंब: छाँव + भक्ति
› - मोहनी तान + मुसकान = प्रेम-मोह, जो वशीकरण-सी विवशता बनाता है
› मुख्य शब्द का अर्थ भाव तय
› संकेत भाव सौंदर्य क्रम याद रखें।